Address:
Ghoomar Mahila Samiti,
Bhimana Road, Bhimana,
Teh- Bali, Dist- Pali, Rajasthan- 306504
Website- ghoomarmahilasamiti.org
Email- info@ghoomarmahilasamiti.org

GHOOMAR
MAHILA SAMITI

2022

ANNUAL REPORT

Contents

3-6	Comments of Executive Committee, CEO.
7-8	Human Resource
9-14	Community Institution
15-16	Women Empowerment
17-18	Capacity Building
19-22	Livelihood and Agriculture
23-24	Health
25-26	Traffic Awareness
27-36	COVID Pandemic * Covid Appropriate Behaviour * Promote Vaccine * Support Needy families
37-38	Social Issues
39-42	Place in the world
43-46	Financial Statements
47-50	About Us

हमारे समाज में महिला अपने जन्म से लेकर मृत्यु तक एक अहम किरदार निभाती है। अपनी सभी भूमिकाओं में निपुणता दर्शाने के बावजूद आज के आधुनिक युग में महिला पुरुष से पीछे खड़ी दिखाई देती है। पुरुष प्रधान समाज में महिला की योग्यता को आदमी से कम देखा जाता है। सरकार द्वारा जागरूकता फ़ैलाने वाले कई कार्यक्रम चलाने के बावजूद महिला की जिंदगी पुरुष की जिंदगी के मुक़ाबले काफी जटिल हो गयी है। महिला को अपनी जिंदगी का ख्याल तो रखना ही पड़ता है साथ में पूरे परिवार का ध्यान भी रखना पड़ता है। महिलाओ को समाज में बराबरी का दर्जा दिलाने व महिलाओं के सामाजिक व आर्थिक विकास के लिए 2010 में घूमर महिला समिति की नींव रखी गयी, उस समय इसका नाम घूमर महिला महासंघ रखा गया था, आगे चलकर इसे 2015 में राजस्थान सरकार के सोसाइटी एक्ट 1958 के अंतर्गत पंजीकृत करवाया गया| घूमर महिला समिति ने 2010 से 2022 तक काफी उपलब्धिया हासिल की है, इसमें विशेष रूप से घूमर महिला समिति ने महिला सशक्तिकरण पर कार्य किया|

अगर हम यहाँ की आदिवासी महिलाओं की आज की अवस्था को 2010 की स्थिति से तुलना करे तो यह तो साफ़ दिखता है की हालात में कुछ तो सुधार हुआ है। यहाँ की महिलाओ का पहले स्वयं के घरो में निर्णय में भागीदारी नहीं होती थी, परन्तु आज गाँव की पंचायत की आम सभा हो या समाज की कोई बैठक घूमर की महिलाए न सिर्फ उसमे भाग लेती अपितु निर्णय भी लेती है, अपनी ग्राम संगठनो की बैठकों में पंचायत प्रतिनिधियो को बुलाती है, और गाँव के विकास के बारे में मांग करती है, यहाँ की महिलाये मुख्यमंत्री की बजट परामर्श बैठक में भी भाग ले चुकी है | महिलाओ में नेतृत्व करने की क्षमता का भी विकास हुआ है, महिलाये पंचायत के चुनाव में खड़ी होती है व गाँव के निर्णय भी स्वयं लेती है| घूमर महिला समिति की महिलाओ ने जो सपना 2010 में देखा था वो सपना आज पूरा होता हुआ दिखाई दे रहा है|

घूमर के कार्यक्षेत्र की अधिकांश महिलाये अनपढ़ है, इसी कमी को पूरा करने के लिए अब वो अपनी बच्चियो को पढ़ा रही है, कई गाँवो में पढाई का लिंगानुपात लडको की तुलना में लडकियों का ज्यादा है|

घूमर महिला समिति समाज में प्रचलित बुराइयां जैसे बाल विवाह, भ्रूण हत्या, दहेज़ प्रथा, बाल मजदूरी, घरेलू हिंसा आदि को समाप्त करने के लिए अथक प्रयास कर रही है |

घूमर महिला समिति ऐसे समाज की आकांशा रखती है जहाँ हर व्यक्ति के साथ सम्मान से पेश आये | आदिवासी समुदाय को सामाजिक और आर्थिक समृद्धि की सीढ़ी चढ़ाना |

अध्यक्ष

कोषाध्यक्ष

सचिव

कार्यकारिणी सदस्य

बोर्ड सदस्य

बोर्ड सदस्य

बोर्ड सदस्य

बोर्ड सदस्य

बोर्ड सदस्य

बोर्ड सदस्य

बोर्ड सदस्य

बोर्ड सदस्य

बोर्ड सदस्य

बोर्ड सदस्य

Note from the CEO

The global COVID 19 pandemic has affected, and continues to affect, the personal and economic condition of our community.

Amidst the unprecedented lockdown to defeat the coronavirus, 4000 women from 400 self-help groups have come to the fore. Away from city lights, women distributed facemasks, provided essential food supplies to needy families during lockdown. Worked to make people aware about health and cleanliness through mic announcement, wall painting, public oath campaign, training, social media etc. and helped in increasing the vaccination rate by combating misinformation.

This women's organization started about 11 years ago has proved to be an invaluable resource in these difficult times. The women of Ghoomar Mahila Samiti have always been courageous, constantly moving ahead and updating their knowledge constantly. These important features of Ghoomar Mahila Samiti have given SHGs the ability to identify, manage and deal with losses.

By uniting the passion and commitment of donors, mentors, community leaders and nonprofits, we are creating sustainable solutions that will continue to improve the quality of life for these poor families for years to come.

We will continue our efforts to collaboratively implement new policies and initiatives to help in the economic and social development of families associated with Ghoomar Mahila Samiti through Self Help Groups.

This year's annual report highlights how we work towards innovation to create long-term solutions to the social and economic problems that are prevalent in the society, which can help in upliftment of these families. We learn as we work, we keep moving forward.

Saddam Husain Chisti
CEO, Ghoomar Mahila Samiti

मुख्य कार्यकारी अधिकारी की टिप्पणी

वैश्विक COVID 19 महामारी ने हमारे समुदाय की व्यक्तिगत और आर्थिक स्तिथि को प्रभावित किया है, और प्रभावित करना जारी रखा है|

कोरोनावायरस को हराने के लिए अभूतपूर्व लॉकडाउन के बीच 400 स्वयं सहायता समूहों की 4000 महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका सामने आई है| शहरो की रौशनी से दूर महिलाओ ने फेसमास्क का वितरण किया, लॉकडाउन के समय में जरूरतमंद परिवारों को आवश्यक खाद्य आपूर्ति प्रदान की| लोगो को स्वास्थ्य और स्वच्छता के बारे में माईक अनाउंसमेंट, दिवार पुताई, जन शपथ अभियान, प्रशिक्षण, सोशल मीडिया इत्यादि के माध्यम से जागरूक करने का कार्य किया और गलत सूचनाओ का मुकाबला करके वैक्सिनेशन दर को बढ़ाने में सहयोग किया|

लगभग 11 वर्ष पूर्व शुरू हुआ महिलाओ का ये संगठन इस कठिन समय में एक अमूल्य संसाधन साबित हुआ है| घूमर महिला समिति की महिलाये हमेशा साहसी रही है, निरन्तर आगे बढ़ रही है व अपने ज्ञान को लगातार अद्यतन कर रही है| घूमर महिला समिति की इन महत्वपूर्ण विशेषताओ ने स्वयं सहायता समूहों को नुकसानों को पहचानने, प्रबंधित करने और उन से निपटने की क्षमता प्रदान की है|

दानदाताओं, सलाहकारों, समुदाय के नेताओं और गैर-लाभकारी संस्थाओं के जुनून और प्रतिबद्धता को एकजुट करके, हम स्थायी समाधान तैयार कर रहे हैं जो आने वाले वर्षों तक इन गरीब परिवारों के जीवन स्तर में सुधार करते रहेंगे।

हम स्वयं सहायता समूह के माध्यम से घूमर महिला समिति से जुड़े परिवारों के आर्थिक और सामाजिक विकास में मदद करने के लिए नई नीतियों और पहलुओ को सहयोगात्मक रूप से लागू करने के लिए अपने प्रयासों को जारी रखेगे|

इस वर्ष की वार्षिक रिपोर्ट में इस बात पर प्रकाश डाला गया है की कैसे हम इन समाज में फैली सामाजिक व आर्थिक समस्याओ के दीर्घकालीन समाधान के माध्यम से नवीनीकरण की दिशा में काम करते है जिससे इन परिवारों को राहत मिल सके| जैसे जैसे हम काम करते है वैसे वैसे हम सीखते है, हम आगे बढ़ते जाते है|

सद्दाम हुसैन , मुख्य कार्यकारी अधिकारी
घूमर महिला समिति

Human Resourse

Senior Rural Development Facilitator

Hada Ram

Arjun Kumar

Shanta Ram

Seeta Kumari

Finance Team

Ranki Kumari

Kesa Ram

Rural Development Facilitator (RDF)

Champa Kumari

Dinesh Kumar

Ganesh Kumar

Ganga Devi

Indra Kumari

Indra Kumari

Leela Kumari

Mangi Lal

Mangi Lal

Reshmi Kumari

Seeta Kumari

Women and children together constitute about 67.7% of the country's population, as per 2011 Census. Empowerment and protection of women, and ensuring their wholesome development is crucial for sustainable and equitable development of the country. The principle of gender equality is enshrined in the Indian Constitution, But the conservative thinking of our society appears against it and deprives women of this right. Ghoomar Mahila Samiti is working for women empowerment in tribal area of Bali since 2009. The objective of Ghoomar Mahila Samiti is all-round development of the tribal families associated with the committee and Ghoomar Mahila Samiti is working continuously for the fulfillment of this objective. Women play an important role in the development of our society, their development is the development of the society and all citizens have to understand these things.Due to the continuous work of Ghoomar Mahila Samiti, the women here are understanding their rights and are taking part in the decisions of the society by moving forward.

2011 के सेन्सस के अनुसार, देश की आबादी का 67.7% हिस्सा महिलाओ और बच्चो का है | महिलाओ का सशक्तिकरण व सुरक्षा के साथ इनका सम्पूर्ण विकास देश के सतत और समान विकास के लिए ज़रूरी है | भारतीय संविधान में लैंगिक समानता का अधिकार निहित है , परन्तु हमारे समाज की रुढ़िवादी सोच इसके विरुद्ध दिखाई देती है और महिलाओ को अपने इस अधिकार से वंचित करती है | घूमर महिला समिति महिला सशक्तिकरण के लिए 2009 से बाली के आदिवासी क्षेत्र में कार्य कर रही है | घूमर महिला समिति का उद्देश्य समिति से जुड़े आदिवासी परिवारों का सर्वांगीन विकास है और अपने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए घूमर महिला समिति सतत कार्य कर रही है | महिलाए हमारे समाज के विकास में अहम् भूमिका निभाती है, इनका विकास समाज का विकास है और ये बाते सभी नागरिको को समझनी होगी |
घूमर महिला समिति के सतत कार्यो की वजह से यहाँ की महिलाये अपने अधिकारों को समझ रही है और आगे बढकर समाज के निर्णयों में भागीदारी ले रही है |

Ramesh Kumar
General Manager, Ghoomar Mahila Samiti

Community Institution

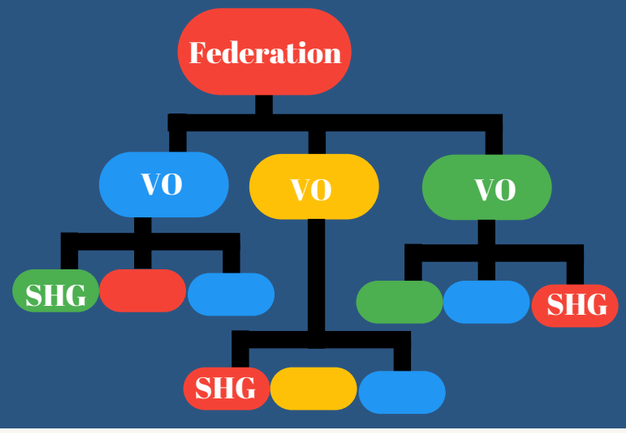

सामुदायिक संस्था

Ghoomar Mahila Samiti is an organization of 5,000 Tribal families, in which these families are associated with Ghoomar Mahila Samiti through 400 self-help groups. Most of these families started regular saving with 10 rupees in the group, which gradually over a period of time has gone up to 100 rupees. Ghoomar Mahila Samiti gave regular and need based training to its members which helped them to become financially self-reliant. The women of "Sheetlamata Self Help Group, Tibra"(a self-help group of Ghoomar Mahila Samiti) shared that their group dividend has been more than 3 lakhs this year. These women have made Self Help Groups a means of livelihood. Whether there is any kind of small or big need, whether to start a new business, health emergencies or any small need, for this they do not need to go to any moneylender, according to their need and according to their convenience, they take loan from their SHGs and repay. The marginal interest that the women pays to SHGs is returned to them in the form of dividend at the end of the year. Suraj Mahila Sankul which is a village organization

of Bhimana, in which they have started the system of pension for their elderly female members whose age is more than 60 years and this pension is paid by women from their own corpus.

घूमर महिला समिति 5000 आदिवासी परिवारो की एक संस्था है, जिसमे ये परिवार 400 स्वयं सहायता समूह के माध्यम से घूमर महिला समिति से जुड़े हुए है | इनमे से कई परिवारों ने समूह में बचत 10-10 रूपये से शुरू की थी, और थोड़ी थोड़ी बचत करके बचत की आदत का विकास किया और आज वोही सदस्य 100-100 रूपये बचत कर रहे है, घूमर महिला समिति ने अपने सदस्यों को बार बार प्रशिक्षण देकर उन्हें आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनना सिखाया है, घूमर महिला समिति का एक स्वयं सहायता समूह "शीतलामाता स्वयं सहायता समूह, टीबरा" की महिलाए बताती है की इस वर्ष उनका समूह लाभांश 3 लाख से अधिक हुआ है| इन महिलाओ ने आजीविका के लिए स्वय सहायता समूह को जरिया बना दिया है| किसी भी प्रकार की छोटी या बड़ी ज़रूरत हो , कोई नया व्यापार शुरू करना हो, बीमारी हो या कोई भी छोटी मोटी ज़रूरत, इसके लिए इन्हें किसी के सामने हाथ फ़ैलाने की ज़रूरत नहीं पड़ती , अपनी आवश्यकता के अनुसार और अपनी सहूलत के अनुसार ये ऋण लेती है और उसे चूका भी लेती है| इस ऋण पर जो मामुली ब्याज महिलाये समूह को चुकाती है वो वर्ष के अंत में लाभांश के रूप में इन्हें वापस मिल जाता है| सूरज महिला संकुल जो की भीमाना का एक ग्राम संगठन है , जिसमे इन्होने अपनी बुजुर्ग महिला सदस्य जिनकी उम्र 60 वर्ष से अधिक है के लिए पेंशन की व्यवस्था शुरू की है और ये पेंशन महिलाये खुद के कोरपस से भुगतान करती है|

In today's changing times, it is still difficult for women to drive a vehicle in rural areas because of social taboo. Santoshi Self Help Group member Ganga Devi, Krishna Self help Group member Ranki Kumari, Himesh Self Help Group member Khimi and Satlok Self Help Group member Sita Kumari took loan from their SHGs and purchased scooty and learned riding it and now they are riding their scooty on their own. These women are an example for many young women today. It is constantly inspiring other women to move forward.

Janu Bai, a member of Chamunda Mata Self Help Group, wants a bright future for her family and wants to give higher education to her children, Janu Bai took loan from the group and got her children enrolled in a school. Today both her son and daughter are illuminating the name of their society in the government sector.

Rinku Kumari, a member of Archana Self Help Group, who has been associated with the Self Help Group for 6 years, after joining the group, got the spirit to improve the society and she decided to become the Sarpanch of the village, the villagers also supported her. And in 2021, Rinku Kumari became the sarpanch of ThandiBeri village and is now working with the women of the group to uplift the condition of the society. Similarly, Devi Bai of Maldar village, who is a member of Tulsi Self Help Group, has inspired many by becoming the Deputy Sarpanch.

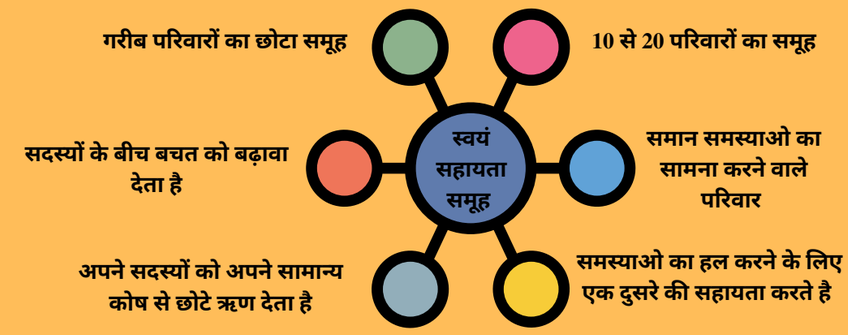

आज के तेजी से बदलते हुए समय में भी यहाँ पर महिलाओ का गाडी चलाना समाज में अलग नजरिये से देखा जाता है| इसी बीच संतोषी स्वयं सहायता समूह की सदस्या गंगा देवी, कृष्ण भगवान स्वयं सहायता समूह की सदस्या रानकी कुमारी, हिमेश स्वयं सहायता समूह की सदस्या खिमी व सतलोक स्वयं सहायता समूह की सदस्या सीता कुमारी ने अपने अपने समूहों से ऋण लेकर एक्टिवा खरीदी और चलाना सीखी, आज कई युवा महिलाओ के लिए ये महिलाये एक मिसाल है| दुसरे परिवारों को लगातार ये आगे बढ़ने की प्रेरणा दे रही है|

चामुंडा माता स्वयं सहायता समूह की सदस्या जनु बाई अपने परिवार के लिए उज्जवल भविष्य चाहती है तथा अपने बच्चो को उच्च शिक्षा देना चाहती है, इसके लिए वो अपने बच्चो को उच्च शिक्षा दिलवा रही है, अपने बच्चो की फीस जनु बाई ने समूह से ऋण लेकर भरी| आज उनका बेटा व बेटी दोनों ही सरकारी क्षेत्र में अपने समाज का नाम रोशन कर रहे है|

अर्चना स्वयं सहायता समूह की सदस्या रिंकू कुमारी जो की 6 वर्षो से स्वयं सहायता समूह में जुडी हुई है, समूह से जुड़ने के बाद उन्हें समाज सुधार करने का जज़्बा मिला व उन्होंने गाँव की सरपंच बनने की ठान ली, ग्राम वासियों ने भी इनका साथ दिया तथा 2021 में रिंकू कुमारी ठंडी बेरी ग्राम की सरपंच बनी व अब समूह की महिलाओ के साथ मिलकर समाज को आगे बढ़ाने का कार्य कर रही है| इसी प्रकार मालदर गाँव की देवी बाई जो की तुलसी स्वयं सहायता समूह की सदस्या है, वो उपसरपंच बनकर सामाज को आगे बढ़ाने का कार्य कर रही है

Many such examples will be found in this tribal area. In these 11 years, these families have become self-sufficient through these self-help groups. A dream that women had 11 years ago seems to be coming true today. Today many big and small organizations inspired by this model of Ghoomar Mahila Samiti are taking inspiration through exposure and implementing this model in many places.

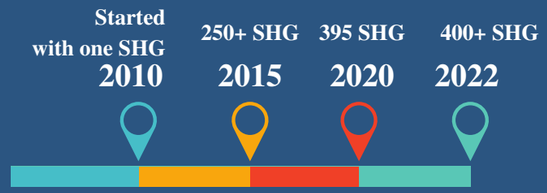

ऐसे कई उदहारण इस आदिवासी अंचल में देखने को मिल जायेगे | इन 11 वर्षो में ये परिवार इन स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से आत्मनिर्भर हुए है| महिलाओ ने जो 11 वर्ष पूर्व एक सपना देखा था वो आज साकार होता हुआ नजर आ रहा है | आज कई बड़ी व छोटी संस्थाए घूमर महिला समिति के इस मॉडल से प्रेरित होकर एक्सपोज़र के माध्यम से प्रेरणा ले रही ही तथा कई स्थानों पर इस मॉडल को लागु कर रही है|

Women Empowerment

Women empowerment mainly refers to the practice of making women independent so that they can take their own decisions as well as manage their lives without any familial or social restrictions. In simple words, it empowers women to take responsibility for their own personal development. Since women have always been oppressed in a patriarchal society, the main aim of women empowerment is to help them stand on an equal footing with men. It is a fundamental step to ensure the prosperity of the country as well as the family. To empower women, Ghoomar Mahila Samiti is working on gender equality and helping women associated with it to stand up for their own sake and lead their lives as per their wish. Ghoomar Mahila Samiti is continuously motivating these women to move forward in self-help group and village organization meetings through training, meeting, exposure, speech etc. There was a time when the women here were not allowed to participate in the group meetings by the society and their family members, but today the same women are not only participating in the meetings but are showing the way to others by becoming leaders. And it is seen that if evils are not curbed, it spreads in the society.

महिला सशक्तिकरण

महिला सशक्तिकरण मुख्य रूप से महिलाओं को स्वतंत्र बनाने की प्रथा को संदर्भित करता है ताकि वे स्वयं निर्णय ले सकें और साथ ही बिना किसी पारिवारिक या सामाजिक प्रतिबंध के अपने जीवन को संभाल सकें। सरल शब्दों में, यह महिलाओं को अपने स्वयं के व्यक्तिगत विकास की जिम्मेदारी लेने का अधिकार देता है। चूंकि पितृसत्तात्मक समाज में महिलाएं हमेशा से उत्पीड़ित रही हैं, इसलिए महिला सशक्तिकरण का मुख्य उद्देश्य उन्हें पुरुषों के साथ समान रूप से खड़े होने में मदद करना है। यह देश के साथ-साथ एक परिवार की समृद्धि सुनिश्चित करने के लिए एक मूलभूत कदम है। महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए, घूमर महिला समिति लैंगिक समानता पर कार्य कर रही है तथा इससे जुडी महिलाओ को अपनी मर्जी से खड़े होने और अपनी इच्छा के अनुसार अपना जीवन चलाने में सहायता कर रही है| घूमर महिला समिति प्रशिक्षण, मीटिंग, एक्सपोज़र, भाषण इत्यादि के माध्यम से लगातार इन महिलाओ को स्वयं सहायता समूह व ग्राम संगठन की बैठकों में इन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित कर रहा है| एक समय था जब यहाँ की महिलाओ को समाज व उनके घर के सदस्यों की तरफ से समूह की बैठको में भी भाग लेनी की अनुमति नहीं थी, परन्तु आज वोही महिलाए ना सिर्फ बैठको में भाग ले रही है अपितु लीडर बनकर दुसरो को राह दिखा रही है और समाज में फैली कुरीतियों व बुराइयों को समाप्त करती हुई दिखाई दे रही है|

Capacity Building

Befor 2009 both economic and social status of women livlinig in tribal villages of Bali block were absolutely poor. The only tasks they had to perform were giving child birth, caring children and other family members, household work and some of them working as domestic helper. They had no role in social activities and decision making and always were dominated by males. Majority was unable to work in a dignified occupation but exploited through several ways.

In this situation Ghoomar Mahila Samiti took initiative organizing poor women to form Self Help Groups. Over the years Four hundred Self Help Groups have been formed at the hamlet level and capacity building initiatives taken through in-house training and handholding process. At the village level SHG Clusters have been constituted with represetatives of all the groups and similarly, Federation with cluster represetatives. Presently this Federation is registered as "Ghoomar Mahila Samiti (GMS)."

In the beginning the groupos started with saving practices and later started internal lending for the small income generation venture. The clusters and GMS are taking part in decision making for community development interventions like selection of beneficiary, recommending deserving group member for loan, household level Zero Budget Natural Farming, loan repayment, Participation in Gram Sabha meeting, Participation in School Management committes also representing any community level programme and others.

क्षमतावर्धन

2009 से पहले बाली प्रखंड के आदिवासी गांवों में रहने वाली महिलाओं की आर्थिक और सामाजिक स्थिति अच्छी नहीं थी। महिलाओ का काम केवल बच्चे को जन्म देना, बच्चों और परिवार के अन्य सदस्यों की देखभाल करना, घर का काम करना और उनमें से कुछ घरेलू सहायिका के रूप में काम करना था। सामाजिक गतिविधियों और निर्णय लेने में उनकी कोई भूमिका नहीं थी और हमेशा पुरुषों का ही वर्चस्व था। अधिकांश लोग एक सम्मानजनक व्यवसाय में काम करने में असमर्थ थे, लेकिन कई तरीकों से उनका शोषण किया गया।

इस स्थिति में घूमर महिला समिति ने स्वयं सहायता समूह बनाने के लिए गरीब महिलाओं को संगठित करने की पहल की। पिछले वर्षों में हैमलेट स्तर पर चार सौ स्वयं सहायता समूहों का गठन किया गया है और इन-हाउस प्रशिक्षण और हैंडहोल्डिंग प्रक्रिया के माध्यम से क्षमतावर्धन की पहल की गई है। ग्राम स्तर पर सभी समूहों के प्रतिनिधि के साथ संकुल का गठन किया गया है और इसी तरह, संकुल प्रतिनिधि के साथ समिति का । वर्तमान में यह समिति "घूमर महिला समिति (जीएमएस)" के रूप में पंजीकृत है। शुरुआत में समूहों ने बचत के साथ शुरुआत की और बाद में लघु आय सृजन उद्यम के लिए आंतरिक ऋण देना शुरू किया। संकुल और जीएमएस लाभार्थी के चयन, ऋण के लिए योग्य समूह सदस्य की सिफारिश करने, घरेलू स्तर पर शून्य बजट प्राकृतिक खेती, ऋण चुकौती, ग्राम सभा की बैठक में भागीदारी, स्कूल प्रबंधन समितियों में भागीदारी जैसे सामुदायिक विकास हस्तक्षेपों के लिए निर्णय लेने में भाग ले रहे हैं।

Livelihood

Ghoomar Mahila Samiti started its journey from 2010, and it was registered in 2015. Meanwhile, the vision of Ghoomar Mahila Samiti was to make the poor families financially self-sufficient, for this, in collaboration with the SRIJAN organization, the committee laid the foundation of an FPO, named "Ghoomar Mahila Producer Company Limited". About 2,000 families are earning their livelihood directly and indirectly from FPO. Initially, the company was selling Custard Apple (Sitaphal) by extracting and selling its pulp after adding value, in 2021 the company produced 20 tons of hand-made Sitaphal Pulp. Taking another step forward in forest produces, this year the company also started processing Palash, Ber and Herbal Gulal. This initiative of women was also appreciated by SDM Madam Bali. Bati Bai, a lady associated with Bhura Dhepra Village Level Collection Center of Upla Bhimana, shares her experience and says that this year she earned Rs 25,000 from Sitaphal Pulp in the season. Bati Bai lives in the hilly area and had to go 50 km away to work as daily wage worker with meagre pay of Rs 200 per day ,out of that some amount is used in fare. But since the company has opened village level collection center in their village, 5 months in a year they are getting employment near the house. The company is also getting support from the SRIJAN, HDFC Bank and NABARD Bank, due to which it is able to take its steps forward.

आजीविका संवर्धन

घूमर महिला समिति ने अपना सफ़र 2010 से शुरू किया था, व 2015 में इसका रजिस्ट्रेशन हुआ था| इस बीच घूमर महिला समिति का विजन था की यहाँ के गरीब परिवारो को आर्थिक रूप से सशक्त बनाना है, इसके लिए सृजन संस्था के सहयोग से समिति ने एक एफपीओ की नींव रखी, जिसका नाम “घूमर महिला प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड” रखा| एफपीओ से करीब 2000 परिवार प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से आजीवका कमा रहे है| शुरुआत में कंपनी सीताफल में मूल्य संवर्धन कर उसका पल्प निकाल कर बेच रही थी, 2021 में कंपनी ने 20 टन हाथ से निर्मित सीताफल पल्प का उत्पादन किया | वन उत्पाद में एक और कदम आगे बढाते हुए इस वर्ष कंपनी ने पलाश, बेर व हर्बल गुलाल का कार्य भी शुरू किया| महिलाओ की इस पहल को एसडीएम महोदया बाली द्वारा भी सराहा गया| भूरा ढेपरा ग्राम स्तर संग्रहण केंद्र से जुडी हुई एक महिला बाटी बाई अपने अनुभव साझा करते हुए बताती है की इस वर्ष उन्होंने सीताफल सीजन में सीताफल पल्प से 25,000 रूपये की आमदनी की| बाटी बाई पहाड़ी क्षेत्र में रहती है तथा मजदूरी के लिए 50 किमी दूर जाना पड़ता है, उसमे भी इन्हें सिर्फ 200 रूपये प्रतिदिन ही मजदूरी मिल पाती है , उसी में से कुछ राशि तो किराये में लग जाती है| परन्तु जब से कंपनी ने इनके ग्राम में ग्राम स्तर संग्रहण केंद्र खोला है तब से वर्ष में 5 महीने इन्हें रोजगार घर के पास ही मिल रहा है| सृजन संस्था, एचडीएफसी बैंक व नाबार्ड बैंक से भी कंपनी को सहयोग मिल रहा है, जिस से ये अपने कदम आगे बढ़ा पा रही है|

Agriculture

Agriculture is the mainstay of the Indian economy and plays an important role in its development. More than two thirds of India's population is directly and indirectly dependent on agriculture. Most of the families associated with Ghoomar Mahila Samiti are directly and indirectly dependent on agriculture. Due to the lack of finance, many times the concern of food security arises for these women. Small landholdings and lack of access to finance, they are not able to get loans and even if they get, then their interest rates are very high, due to which it becomes almost impossible for these families to repay them. Due to these problems, with the help of “Rang De P2P” organization, interest free and low interest loan of about 76 lakhs was made available to these poor families for agriculture promotion. With this loan amount, these poor farmers got tube well dug, depend their wells , levelled their field , and used advanced seed technology etc.

Nanda Devi who is a hardworking woman farmer from Kagdara, says that this time due to less rain, her crop's production was less, she also contacted the bank but she did not get satisfactory answer from there, she also contacted moneylenders but the interest rate was very high, because she is also associated with a self-help group, so she contacted Ghoomar Mahila Samiti and took a loan of 70 thousand from Rang De Sanstha at low interest and got her borewell dug in her farm, With the help of this, now she is able to water her fields well, and this time her cultivation has been good. Nanda Devi says that my self help group has helped me a lot to secure bread to my family.

कृषि

कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार है और इसके विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है | भारत की दो तिहाई से अधिक जनसंख्या प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से कृषि पर निर्भर है|

घूमर महिला समिति से जुड़े हुए अधिकांश परिवार प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से कृषि पर निर्भर है| वित्त की कमी के चलते कई बार इन महिलाओ के लिए खाद्य सुरक्षा की चिंता पैदा हो जाती है| छोटे किसान और पहुँच ना होने की वजह से भी इन्हें बिना रहन के बड़ा ऋण नहीं मिल पाता और मिल भी जाता है तो उसकी ब्याज दर बहुत ज्यादा होती है, जिसकी वजह से उसे चूका पाना इन परिवारों के लिए लगभग मुश्किल हो जाता है| इन्ही समस्याओ के चलते हुए “रंग दे पी 2 पी” संस्था के सहयोग से इन गरीबे परिवारों को करीब 76 लाख का कृषि संवर्धन हेतु ब्याज मुक्त व कम ब्याज पर ऋण उपलब्ध करवाया गया| इस ऋण राशि से इन गरीब किसानो ने ट्यूबवेल खुदाई, कुआं गहरीकरण, खेत समतलीकरण, उन्नत बीज तकनीक का प्रयोग इत्यादि कार्यो में इस्तेमाल किया|

नंदा देवी जो कागदडा की रहने वाली एक मेहनती महिला किसान है, नंदा देवी कहती है की इस बार बारिश कम होने की वजह से उनकी फसल भी कम हो रही थी, उन्होंने बैंक में भी संपर्क किया मगर उन्हें वहा से संतोषप्रद उत्तर नहीं मिला, साहूकार के पास भी गयी परन्तु ब्याज दर काफी ज्यादा थी, चूँकि वो एक स्वयं सहायता समूह से भी जुडी हुई है तो उन्होंने घूमर महिला समिति से संपर्क करके रंग दे संस्था से 70 हज़ार का कम ब्याज पर ऋण लिया तथा अपने खेत में इन्होने बोरवेल खुदवाया, इसकी सहायता से अब वो अपने खेतो को अच्छी तरह से पानी दे पा रही है, और इनकी इस बार खेती अच्छी हुई है| नंदा देवी कहती है की मुझे मेरे परिवार को सुरक्षित करने के मेरे स्वयं सहायता समूह ने काफी सहायता की है|

Cancer Awareness

Cancer cases are increasing rapidly in India; Hence it is important to increase cancer literacy and knowledge among the population. Ghoomar Mahila Samiti organized cancer awareness programs with the help of SRIJAN and Asian Head and Neck Care Cancer Foundation.

Objectives of Cancer Awareness Program:

- Creating awareness about cancer and removing the stigma and fear associated with it.
- Helping people to recognize the early signs of cancer, thus helping them to get treatment at an early stage.
- Educating people about the major risk factors, as more than 30% of cancer cases can be prevented by making lifestyle changes or avoiding risk factors.
- Educating people about the importance of regular check-ups and tests.
- Informing women about mammograms, clinical breast exams and breast self-exams.
- The primary goal of Ghoomar Mahila Samiti is to promote awareness among families here and to emphasize the importance of early detection of cancer. Cancer awareness can inspire people to make healthier lifestyle choices.

कैंसर साक्षरता

भारत में कैंसर के मामले तेजी से बढ़ रहे हैं; इसलिए जनसंख्या के बीच कैंसर साक्षरता और ज्ञान को बढ़ाना महत्वपूर्ण है। घूमर महिला समिति ने सृजन संस्था व एशियन हेड एंड नैक केयर कैंसर फाउंडेशन की सहायता से कैंसर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किये|

कैंसर जागरूकता कार्यक्रम के उद्देश्य:

- कैंसर के प्रति जागरूकता पैदा करना और इससे जुड़े कलंक और भय को दूर करना|
- लोगों को कैंसर के शुरुआती लक्षणों को पहचानने में मदद करना, इस प्रकार उन्हें प्रारंभिक अवस्था में इलाज कराने में मदद मिलती है।
- लोगों को प्रमुख जोखिम कारकों के बारे में शिक्षित करना, क्योंकि 30% से अधिक कैंसर के मामलों को जीवनशैली में बदलाव करके या जोखिम वाले कारकों से बचकर रोका जा सकता है।
- लोगों को नियमित जांच और जांच के महत्व के बारे में बताना।
- महिलाओं को मैमोग्राम, नैदानिक स्तन परीक्षा और स्तन स्व-परीक्षा के बारे में सूचित करना।
- घूमर महिला समिति का प्राथमिक लक्ष्य यहाँ के परिवारों में जागरूकता को बढ़ावा देना और कैंसर के प्रारंभिक पहचान के महत्व पर जोर देना है। कैंसर के प्रति जागरूकता लोगों को स्वस्थ जीवन शैली विकल्प बनाने के लिए प्रेरित कर सकती है।

Traffic Awareness

It is necessary for everyone to be aware of traffic signs and traffic rules. Traffic signs can give you important information that can ensure your safety and the safety of those around you. Awareness of road rules can lower chances of accidents.

Over 1,50,000 people in India are killed every year due to road accidents. With a per day average of 400 fatalities, India has one of the highest rates of accidents in the whole world. One of the prime reasons for these accidents is negligence of road safety norms and traffic signs. Be it a pedestrian or a person driving any vehicle, having awareness about road safety norms and traffic signs is an absolute necessity in today's time.

Traffic signs provide us with important instructions and information on the condition of roads. They not only help in the smooth flow of traffic but also guide and warn people on how they should conduct themselves while on the roads. Drivers who are pre-informed about the points of entry, exit, turns, and other road conditions by way of traffic signs naturally make less number of mistakes and reach their destinations in a smooth manner.

In this episode, Ghoomar Mahila Samiti celebrated Traffic Safety Week in October 2021, in which awareness was made through training, and traffic awareness boards were put up in about 10 villages, through which people were informed about traffic rules and road safety norms. being made aware

यातायात जागरूकता

यातायात संकेतों और सड़क नियमों के प्रति सभी को जागरूक होना आवश्यक है। यातायात संकेत आपको महत्वपूर्ण जानकारी दे सकते हैं जो आपकी सुरक्षा और आपके आस-पास के लोगों की सुरक्षा सुनिश्चित कर सकते हैं और सड़क नियमों के बारे में जागरूकता दुर्घटनाओं की संभावना को कम कर सकती है।

भारत में हर साल 15000 से अधिक लोग यातायात दुर्घटनाओं के कारण मारे जाते हैं। प्रतिदिन औसतन 400 मौतों के साथ, भारत में दुर्घटनाओं की दर पूरी दुनिया में सबसे अधिक है। इन दुर्घटनाओं का एक प्रमुख कारण सड़क सुरक्षा मानदंडों और यातायात संकेतों की लापरवाही है। पैदल यात्री हो या कार/मोटरसाइकिल चलाने वाला व्यक्ति, सड़क सुरक्षा मानदंडों और यातायात संकेतों के बारे में जागरूकता होना आज के समय में एक परम आवश्यकता है।

यातायात संकेत हमें सड़कों की स्थिति पर महत्वपूर्ण निर्देश और जानकारी प्रदान करते हैं। वे न केवल यातायात के सुचारू प्रवाह में मदद करते हैं बल्कि लोगों को मार्गदर्शन और चेतावनी भी देते हैं कि उन्हें सड़कों पर कैसे व्यवहार करना चाहिए। यातायात संकेतों के माध्यम से प्रवेश, निकास, मोड़ और अन्य सड़क स्थितियों के बारे में पूर्व-सूचित ड्राइवर स्वाभाविक रूप से कम गलतियां करते हैं और आसानी से अपने गंतव्य तक पहुंचते हैं।

इसी कड़ी में घूमर महिला समिति द्वारा अक्टूबर माह 2021 में यातायात सुरक्षा सप्ताह मनाया, जिसमे प्रशिक्षण के माध्यम से जागरूक किया गया, व करीब 10 गाँवों में यातायात जागरूकता के बोर्ड लगाये गए, जिसके माध्यम से लोगो को यातायात नियमो व सडक सुरक्षा मानदंडो के बारे में जागरूक किया जा रहा है|

Encouraging Vaccine promotion among rural communities

With more than 25 million cases and 3,00,000 reported deaths, the second COVID -19 wave shoke the public health system, with the most marginalized communities bearing the brunt of it. For multiple weeks in late April and early May, when the surge had engulfed, G.M.S. would receive daily distress information from our members looking for hospital beds, oxygen, and medicines. Again, it was a reminder that the poor and marginalized were hit disproportionately by the crisis.

In April 2021, Govt of India started vaccination of those above 60 years, who are considered vulnerable to COVID-19 infection. As the vaccine was introduced in a short span of one year there were many misinformation around vaccine safety. In the tribal areas of Bali,Rajasthan rumours like people will die after two years, lose fertility, etc were bring circulated amongst communities. These rumours combined with tribal culture lead to resistance towards vaccines. People were not willing to take a single shot of vaccine in the area. Even in July 2021, the vaccination rate was very low and designated vaccine centres would not even get a single person to take the vaccine. To address this, G.M.S. started a risk communication campaign to promote vaccination and check the spread of misinformation surrounding it. The campaign was planned in collaboration with WHO India. Through the campaign GMS aimed to increase vaccination uptake in most vulnerable groups and encourage people to follow Covid Appropriate Behaviour(CAB) even after vaccination. The campaign started in August 2021 and was concluded in November 2021.

Since August, G.M.S. has been running extensive campaigns to educate people about vaccines and share correct information with the public. To develop faith in the vaccines, the Board Members and Staff of G.M.S. took vaccines and shared their experience with others.

ग्रामीण समुदायों के बीच वैक्सीन को बढ़ावा

25 मिलियन से अधिक मामलों और 3,00,000 मौतों की सूचना के साथ, दूसरी COVID-19 लहर ने सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली को झकझोर दिया, जिसका खामियाजा सबसे अधिक हाशिए वाले समुदायों को भुगतना पड़ा। अप्रैल के अंत और मई की शुरुआत में कई हफ्तों के लिए, जब उछाल ने घेर लिया था, घूमर महिला समिति अस्पताल के बिस्तर, ऑक्सीजन और दवाओं की तलाश करने वाले हमारे सदस्यों से दैनिक संकट की जानकारी प्राप्त करता था |फिर से, यह एक अनुस्मारक था कि इस संकट से गरीब और हाशिए पर रहने वाले लोग बुरी तरह प्रभावित हो रहे है।

अप्रैल 2021 में, भारत सरकार ने 60 वर्ष से अधिक उम्र के लोगों का टीकाकरण शुरू किया, जिन्हें COVID-19 संक्रमण की चपेट में माना जाता है। चूंकि वैक्सीन को एक साल की छोटी अवधि में पेश किया गया था, इसलिए वैक्सीन सुरक्षा के बारे में कई गलत सूचनाएं थीं। बाली, राजस्थान के आदिवासी इलाकों में दो साल के बाद लोग मर जाएंगे, प्रजनन क्षमता खो देंगे, आदिवासी संस्कृति के साथ ये अफवाहें टीकों के प्रति प्रतिरोध को जन्म देती हैं जैसी अफवाहें समुदायों के बीच प्रसारित की गईं। क्षेत्र में लोग वैक्सीन का एक भी शॉट लेने को तैयार नहीं थे। जुलाई 2021 में भी, जिन वैक्सीन केंद्रों को नामित किया गया था इनमे टीकाकरण की दर बहुत कम थी|

इससे निपटने के लिए घूमर महिला समिति ने टीकाकरण को बढ़ावा देने और इसके आसपास गलत सूचना के प्रसार को रोकने के लिए एक जागरूकता अभियान शुरू किया। अभियान की योजना विश्व स्वास्थ्य संगठन, इण्डिया के सहयोग से बनाई गई थी। अभियान के माध्यम से घूमर महिला समिति का उद्देश्य सबसे कमजोर समूहों में टीकाकरण को बढ़ाना और लोगों को टीकाकरण के बाद भी कोविड उपयुक्त व्यवहार का पालन करने के लिए प्रोत्साहित करना था। अभियान अगस्त 2021 में शुरू हुआ और नवंबर 2021 में समाप्त हुआ।

अगस्त से घूमर महिला समिति ने लोगों को टीकों के बारे में शिक्षित करने और जनता के साथ सही जानकारी साझा करने के लिए एक व्यापक अभियान चलाया। टीकों में विश्वास विकसित करने के लिए, घूमर महिला समिति के बोर्ड के सदस्य और कर्मचारीयो ने सबसे पहले टीके लिए और दूसरों के साथ अपने अनुभव साझा किए।

Impact

Tribal areas of Bali block are not very well connected with the mainstream world. With close to only 20% of households having stable electricity connections, access to the latest and credible information does not come easy. To date, we do not have access to credible and verified information on the latest on Coronavirus; even local doctors do not know much about COVID-19.

The social fabric of tribal society makes vaccines very difficult. In many areas, taking vaccine shots is still difficult.

Based on interaction with community leaders identified a few critical issues that created vaccine hesitancy amongst people. They were :

#1: Lack of awareness amongst people on COVID disease and measures that can stop its spread

#2: Rumors about vaccines like people will die soon, it is an attempt to control population, vaccine will cause infertility in men and women

#3: Vaccine shortage and lack of information how to register, location etc

The campaign "Encouraging vaccine promotion among rural communities ." was developed to assess the need of the community to combat the spread of rumours around COVID-19 vaccination. Different communication tools were used to run activities with a focus on building community resilience against any future increase in COVID cases. Capacity building and information sharing were pillars of the campaign. Multiple trainings of different stakeholders were organized to enable local leaders play a role in community led vaccination drives.

The project also aimed at encouraging use of common hand-washing stations to instil a habit of handwashing among tribal communities.

प्रभाव

बाली प्रखंड के जनजातीय क्षेत्र मुख्यधारा की दुनिया से बहुत अच्छी तरह से नहीं जुड़े हैं। केवल 20% घरों में स्थिर बिजली कनेक्शन होने के कारण, नवीनतम और विश्वसनीय जानकारी तक पहुंच आसान नहीं है। आज तक, हमारे पास कोरोनावायरस पर नवीनतम पर विश्वसनीय और सत्यापित जानकारी तक पहुंच नहीं है; यहां तक कि स्थानीय डॉक्टर भी COVID-19 के बारे में ज्यादा नहीं जानते हैं। आदिवासी समाज का सामाजिक ताना-बाना टीकों को बहुत मुश्किल बना देता है। कई क्षेत्रों में, वैक्सीन शॉट लेना अभी भी मुश्किल है।

समुदाय के नेताओं के साथ बातचीत के आधार पर कुछ महत्वपूर्ण मुद्दों की पहचान की, जिन्होंने लोगों के बीच टीके की झिझक पैदा की। वो थे :

#1: लोगों में COVID रोग के बारे में जागरूकता की कमी और इसके प्रसार को रोकने वाले उपाय |

#2: वैक्सीन के बारे में अफवाहें जैसे लोग जल्द ही मर जाएंगे, यह जनसंख्या को नियंत्रित करने का एक प्रयास है, वैक्सीन पुरुषों और महिलाओं में बांझपन का कारण होगा |

#3: वैक्सीन की कमी और रजिस्ट्रेशन कैसे करें, लोकेशन आदि की जानकारी का अभाव |

अभियान "ग्रामीण समुदायों के बीच टीके को बढ़ावा" जो कि कोविड -19 टीकाकरण के आसपास अफवाहों के प्रसार से निपटने के लिए समुदाय की आवश्यकता का आकलन करते हुए विकसित किया गया था। भविष्य में किसी भी प्रकार की अफवाहों के खिलाफ सामुदायिक लचीलापन बनाने पर ध्यान देने के साथ टिको को बढ़ावा देने वाली गतिविधियों को चलाने के लिए विभिन्न संचार उपकरणों का उपयोग किया गया था | COVID मामलों में क्षमता निर्माण और सूचना साझा करना अभियान के स्तंभ थे। समुदाय के नेतृत्व वाले टीकाकरण अभियान में स्थानीय नेताओं की भूमिका निभाने में सक्षम बनाने के लिए विभिन्न हितधारकों के कई प्रशिक्षण आयोजित किए गए।

इस परियोजना का उद्देश्य जनजातीय समुदायों में हाथ धोने की आदत डालने के लिए आम हाथ धोने के स्टेशनों के उपयोग को प्रोत्साहित करना भी था।

"A few people had passed away earlier even after taking the vaccine, which has resulted in fear. Similar information was circulating on social media was a major reason for vaccine hesitancy, we were encouraging our community to take vaccine doses and educating them about rumors. Ghoomar leaders first took the vaccine shot and sent a message to the community that the vaccine is safe, now people are taking the vaccine on time."
Kamali Bai, President Ghoomar Mahila Samiti

On an average more than 100 people including children use these handwashing stations. The campaign outreach was 15,000 families in six gram panchayat (15 villages total) in Bali Block. A total of 12 Vaccine Ambassadors were developed to give training at grassroots level about vaccination. 6 Panchayat level committees were formed in which Sarpanch, Wardpanch, Asha/ Anganwadi Worker and S.H.G. leaders were members. A Master Trainer was also hired to train these 12 Vaccine Ambassadors and 6 COVID Committees. Awareness through mic announcement was done in 15 villages.

"When we started vaccination in tribal areas, people were in fear, only 5 to 10 people were taking the vaccine in a week. Ghoomar representatives came to us and shared their ideas about vaccine promotion. They were spreading awareness about vaccines and encouraging people to take vaccine doses. Hence, people are taking vaccine doses. Now the stock is finished in only a few hours."
Dr. Sunil Bhati,
Senior Doctor at Bheemana P.H.C.

The most pertinent impact of this project has been that women of the Federation have taken vaccine shots. They also motivated other villagers and S.H.G. members to take vaccine doses.

Community members were initially resisting the vaccination due to rumors of deaths, infertility, and impotency. After several rounds of training and awareness campaigns, Board members of Ghoomar took the jab and made videos to aware other people.

As per the information of P.H.C., Nana and Bhimana initially 80% of the vaccine used to go back, after several awareness programs, now the situation is that the vaccine gets over within an hour or two. People are demanding that more doses of vaccine shall be provided in the area.

These efforts have helped in increasing & spreading the right information and awareness about COVID Vaccines. It has helped people to clear their doubts and misunderstanding around vaccines and more and more people in the area are taking vaccines now.

बच्चों सहित औसतन 100 से अधिक लोग इन हैंडवाशिंग स्टेशनों का उपयोग करते हैं। बाली ब्लॉक में छह ग्राम पंचायत (कुल 15 गांव) में 15000 परिवारों तक अभियान की पहुंच थी। टीकाकरण के बारे में जमीनी स्तर पर प्रशिक्षण देने के लिए कुल 12 टीका प्रचारक विकसित किए गए। 6 पंचायत स्तरीय समितियों का गठन किया गया जिसमें सरपंच, वार्डपंच, आशा/आंगनवाड़ी कार्यकर्ता एवं स्वयं सहायता समूह के सदस्य थे। इन 12 टीका प्रचारक और 6 COVID कमेटियो को प्रशिक्षित करने के लिए एक मास्टर ट्रेनर भी नियुक्त किया गया था। 15 गांवों में माइक अनाउंसमेंट के जरिए जागरुकता अभियान चलाया गया | इस परियोजना का सबसे प्रासंगिक प्रभाव यह रहा है कि फेडरेशन की महिलाओं ने स्वयं वैक्सीन शॉट्स लेकर अन्य ग्रामीणों और एवं स्वयं सहायता समूह सदस्यों को टीके की खुराक लेने के लिए प्रोत्साहित किया | मृत्यु, बांझपन और नपुंसकता की अफवाहों के कारण समुदाय के सदस्य शुरू में टीकाकरण का विरोध कर रहे थे। कई दौर के प्रशिक्षण और जागरूकता अभियानों के बाद, घूमर के बोर्ड के सदस्यों ने इस पर ध्यान दिया और अन्य लोगों को जागरूक करने के लिए वीडियो बनाए।

पीएचसी की जानकारी के अनुसार नाना और भीमाना ग्राम में शुरूआत में 80% वैक्सीन स्टॉक वापस चला जाता था, कई जागरूकता कार्यक्रमों के बाद अब स्थिति यह है कि एक या दो घंटे में वैक्सीन खत्म हो जाती है। लोग मांग कर रहे हैं कि क्षेत्र में वैक्सीन की अधिक खुराक उपलब्ध कराई जाए। इन प्रयासों ने COVID टीकों के बारे में सही जानकारी और जागरूकता बढ़ाने और फैलाने में मदद की है। इसने लोगों को टीकों के बारे में अपनी शंकाओं और गलतफहमी को दूर करने में मदद की है और क्षेत्र में अधिक से अधिक लोग अब टीके ले रहे हैं।

RATION DISTRIBUTION DRIVE

Owing to the critical situation created due to second wave of COVID-19, a panic has struck to the entire nation. Unlike the first wave, where the only problem was of livelihood, this time it was about lives. The wave has reached the villages and on an average 4-5 people were dying in every village every day. Due to fear, people were not going to test themselves. The data were converted to people and people to our acquaintances.

Lockdown is for the protecting lives of the people, but it become difficult for people who survive on hand to mouth earning. It became difficult for people to ensure three times meal for the family.

Why it is important to Donate Dry Ration Kits?

- To Support Needy families
- To reduce the impact of COVID-19 pendamic
- To Enhance the health of Needy families

Identification of families

This year a lot of families were affected from COVID and they needed help. In these tough times, everyone was worried about something new unfolding each day. Some were concerned about their jobs and their children's education. Others had to deal with different situations and problems. However, it got really intense when the issue was – How to feed your family? Ghoomar Mahila Samiti took the initiative to donate dry ration kits to these families. Ghoomar Mahila Samiti identified 509 families with the help of Self Help Groups and Panchayat Representatives. 251 families were those who lost their single earner or lost employment in this pandemic. 204 families were widows, who were financially vulnerable. 54 Migrant worker's families who were doing job outside from state and they lost their livelihood in this lockdown. These families were not getting any benefits from Govt/Other Donors, That's why GMS decided to help these families.

राशन वितरण अभियान

COVID-19 की दूसरी लहर के कारण बनी गंभीर स्थिति के कारण पूरे देश में खलबली मच गई थी। पहली लहर के विपरीत, जहां एकमात्र समस्या आजीविका की थी, इस बार यह जीवन के बारे में भी थी। लहर गांवों तक पहुंच चुकी थी और हर गांव में औसतन 4-5 लोग प्रतिदिन मर रहे थे. डर के कारण लोग अपनी परीक्षा नहीं लेने वाले थे। मरने वालो का डेटा अब लोगों और लोगों को हमारे परिचितों में बदल दिया गया था।

लॉकडाउन लोगों की जान बचाने के लिए था, लेकिन हाथ-मुंह की कमाई के दम पर गुजारा करने वालों के लिए परिवार के लिए तीन वक्त का भोजन सुनिश्चित करना मुश्किल हो गया था।

राशन किट से सहायता करना क्यों महत्वपूर्ण था?

- जरूरतमंद परिवारों की सहायता करने के लिए
- COVID-19 महामारी के प्रभाव को कम करने के लिए
- जरूरतमंद परिवारों के स्वास्थ्य को ठीक रखने के लिए

परिवारों का चयन

इस साल बहुत सारे परिवार COVID से प्रभावित हैं और उन्हें मदद की ज़रूरत है। इस कठिन समय में, हर कोई हर दिन कुछ नया सामने आने को लेकर चिंतित है। कुछ अपनी नौकरी और अपने बच्चों की शिक्षा को लेकर चिंतित हैं। दूसरों को विभिन्न स्थितियों और समस्याओं से जूझना पड़ता है।

हालाँकि, यह वास्तव में तीव्र मुद्दा है - अपने परिवार का भरण-पोषण कैसे करें? घूमर महिला समिति ने इन परिवारों को सूखा राशन किट पहुँचाने में पहल की । घूमर महिला समिति ने स्वयं सहायता समूहों और पंचायत प्रतिनिधियों की मदद से 509 परिवारों की पहचान की । इस महामारी में 251 परिवारों ने अपना एकल कमाने वाला या रोजगार खो दिया था। 204 परिवार विधवा थे, जो आर्थिक रूप से कमजोर थे। 54 प्रवासी कामगारों के परिवार जो राज्य से बाहर नौकरी कर रहे थे और उन्होंने इस तालाबंदी में अपनी आजीविका खो दी। इन परिवारों को सरकार/अन्य दाताओं से कोई लाभ नहीं मिल रहा था, इसलिए घूमर महिला समिति ने इन परिवारों की मदद करने का फैसला किया।

Our COVID Relief campaign

To help ease the situation, Ghoomar Mahila Samiti with the help of Samarthya distributed dry ration kits to the 509 families who were most affected by the pandemic.

Cost of dry ration kits

So far, we have provided 509 dry ration kits to 509 families in 13 Gram Panchayat of Bali block, Rajasthan. The cost of one dry ration kit was Rs. 740 (Seven hundred Forty only) which included 2kg Dal, 2 litre mustard oil, 1 kg Salt, 200gm Red chili powder, 100 gm Coriander powder, 100 gm Turmeric powder, 1 kg Sugar, 1 kg Jaggery (Gud), 2 Soap and 1 kg surf. The quantity provided in each kit is sufficient for 30 days for a family of five. We have not included aata (Wheat flour) in ration kit because Govt distribute wheat on Ration shop to these families each month.

Final Words

In order to reduce the suffering of underfed and less privileged ones in terms of hunger, Ghoomar Mahila Samiti with Samarthya has initiated the distribution of Dry Ration kits. After the lockdown, hunger has become a root cause of suffering in the lives of economically backward individuals and families. People are unable to make the arrangement for rations, and thus, they are putting their families in a grave-like situation. We are thankful to “Samarthya” which helped us in this difficult situation.

हमारा COVID राहत अभियान

स्थिति को आसान बनाने में मदद करने के लिए, घूमर महिला समिति ने सामर्थ्य संस्थाकी मदद से 509 परिवारों को सूखा राशन किट वितरित कर रही है जो महामारी से सबसे अधिक प्रभावित हुए थे।

सूखे राशन किट की कीमत

अब तक हमने राजस्थान के बाली उपखण्ड की 13 ग्राम पंचायत में 509 परिवारों को 509 सूखा राशन किट प्रदान किया | एक सूखे राशन किट की कीमत 740 रुपये (सात सौ चालीस मात्र) है जिसमें 2 किलो दाल, 2 लीटर सरसो तेल, 1 किलो नमक, 200 ग्राम लाल मिर्च पाउडर, 100 ग्राम धनिया पाउडर, 100 ग्राम हल्दी पाउडर, 1 किलो चीनी, 1 किलो गुड़ (गुड़), 2 साबुन और 1 किलो सर्फ शामिल है। प्रत्येक किट में उपलब्ध कराई गई मात्रा पांच सदस्य वाले परिवार के लिए 30 दिनों के लिए पर्याप्त है। हमने राशन किट में आटा (गेहूं का आटा) शामिल नहीं किया क्योंकि सरकार इन परिवारों को हर महीने राशन की दुकान पर गेहूं वितरित करती है।

अंतिम शब्द

भूख के मामले में अल्पपोषित और कम विशेषाधिकार प्राप्त लोगों की पीड़ा को कम करने के लिए, घूमर महिला समिति ने सामर्थ्य संस्था के साथ सूखा राशन किट वितरण शुरू किया। लोकडाउन के बाद आर्थिक रूप से पिछड़े व्यक्तियों और परिवारों के जीवन में भूखमरी दुख का मूल कारण बन गई| लोग राशन की व्यवस्था नहीं कर पा रहे थे और इस तरह अपने परिवार को गंभीर स्थिति में डाल रहे थे। हम आभारी हैं कि "सामर्थ्य संस्था" ने इस कठिन परिस्थिति में इन गरीब परिवारों की सहायता की।

Pradhan Mantri Jeevan Jyoti Bima Yojana (PMJJBY) and Pradhan Mantri Suraksha Bima Yojana (PMSBY) both these schemes were started to save the family of the common man from financial loss. Due to lack of awareness and rumors, the families here were deprived of this scheme. Ghoomar Mahila Samiti started doing awareness work on this to get the benefits of these schemes to their poor families. Trained his staff and CRP about these schemes, These staff and CRP started giving information related to these schemes to the women in self-help groups and village organizations and started telling about the benefits of them. Initially, the Ghoomar Mahila Samiti organized camps to connect more and more people to this scheme, where the Ghoomar Mahila Samiti connected these families with these insurance schemes by installing Bank BC at Bhimana.

For these schemes, Rajasthan Marudhara Gramin Bank, Branch Nana also contributed a lot in this and made people aware through camps and mobile vans on the occasion of Women's Day. Due to this effort of Ghoomar Mahila Samiti, about 2,000 women got benefited from this insurance scheme.

Other Social Issues

प्रधान मंत्री जीवन ज्योति बिमा योजना व प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना (PMSBY) ये दोनों ही योजनाये आम जन के परिवार को होने वाली आर्थिक क्षति से बचाने के लिए शुरु की गयी थी| जागरूकता की कमी व अफवाहों के चलते यहाँ के परिवार इस योजना से वंचित थे| घूमर महिला समिति ने अपने गरीब परिवारों को इन योजनाओ का लाभ दिलवाने के लिए इस पर जागरूकता सम्बंधित कार्य करना शुरू किया| अपने स्टाफ व सीआरपी को इन योजनाओ के बारे में प्रशिक्षण दिया, इन स्टाफ व सीआरपी ने स्वय सहायता समूह व ग्राम संगठन में महिलाओ को इन योजनाओ से सम्बंधित जानकारी देना शुरू किया व इनसे होने वाले फायदों के बारे में बताना शुरू किया| शुरूआत में घूमर महिला समिति ने ज्यादा से ज्यादा लोगो को इस योजना से जोड़ने के लिए कैम्प लगाए, जहाँ पर घूमर महिला समिति ने बैंक बीसी को लगाकर इन परिवारों को इन बिमा योजनाओ से जुडवाया| इन योजनाओ के लिए राजस्थान मरुधरा ग्रामीण बैंक , शाखा नाना ने भी इसमें काफी सहयोग किया तथा महिला दिवस के अवसर पर कैंप व मोबाइल वैन के माध्यम से लोगो को जागरूक किया | घूमर महिला समिति के इस प्रयास से करीब 2000 महिलाए इस बीमा योजना से लाभान्वित हुई|

Place in the World Report published by WHO

World Health Organization | South-East Asia | India

Health topics | Our work | News | Emergencies | About us

Home / News / Feature stories / Detail / Tribal women in Rajasthan lead the fight against COVID-19

Tribal women in Rajasthan lead the fight against COVID-19

7 March 2022

Away in a rural hamlet in Bali block in the Pali district in Rajasthan, members of the self-help group Ghoomar Mahila Samiti are sensitising communities about COVID-19 appropriate behaviours (CAB), the importance of COVID-19 vaccination and, last but not the least, combating rumours and misinformation. These women are leveraging community engagement and communication tools to disseminate messages related to COVID-19 to hard-to-reach populations in tribal dominated areas of western Rajasthan.

They are among the millions of women being celebrated on International Women's Day on 8 March for bringing 'Gender equality today for a sustainable tomorrow' to reduce climate impacts and health risks among vulnerable populations.

Women and girls took ownership of health promotion campaigns to keep their communities safe and healthy during the pandemic. ©Achin Phulre for WHO India

who.int

Risk communication and working with communities

Risk communication is the dissemination of information to the public about health risks and events. It also entails providing advice on how to change behaviours in order to prevent and mitigate risks. In the last decade or so, the entire approach towards how risk communication is formulated and delivered has evolved dramatically. It has been driven by the introduction of new communication platforms and evidence collected by social sciences on how people communicate and process both information and misinformation acquired through digital platforms. The fundamental source of transformation has been technological. Increased connectivity and internet penetration, proliferation of smart phones, and emerging popularity of social media apps, has fundamentally changed how information is sourced, analyzed and communicated.

Rumours and misinformation now spread in seconds, making the role of credible agencies critical in order to avert hysteria, panic and misinformed decision making. The challenge of infodemics[4] will only increase, and it is essential to stay ahead of the curve by investing in technology and systems to manage situations through digital means and traditional community engagement.

Communities are often the first responders to any emergency, even before any government officials or agency can reach them. It is not only about the engagement per se, but more importantly, how to engage that needs to be reviewed. Strengthening of health volunteer programmes and use of community health workers, integrated into the primary health-care system, has emerged as an important investment with immense potential during the COVID-19 pandemic. Grassroots non-governmental organizations (NGO) and civil society organizations (CSO) working in the area of health have effectively bridged community concerns with government services and advisories. Greater investment in and sensitization of public health staff and CHWs on culturally sensitive ways to communicate with local populations and win their trust will go a long way in strengthening community engagement as required to ensure health system resilience.

Communities are often the first responders to any emergency, even before any government officials can reach them.

[4] An excessive amount of information about a problem that is typically unreliable, spreads rapidly, and makes a solution more difficult to achieve by virtue of its rapid spread via multiple routes.

Media Headlines

करवट लेती आदिवासी तस्वीर : पिछले साल नौ टन, इस बार 15 टन का लक्ष्य

सीताफल के पल्प ने दी नई राह, अब स्वयं बनाएंगे आइस्क्रीम

आइस्क्रीम का स्वाद बढ़ा रहे सीताफल के पल्प ने संवारी आदिवासी महिलाओं की तकदीर

राजकमल व्यास
rajasthanpatrika.com

पाली. सिरोही से कोसों दूर पाली जिले के घाटी के आदिवासी क्षेत्र की महिलाएं आज खुद के बूते विकास की नई कहानी गढ़ रही हैं। इनकी कर्मठता और हुनर का ही कमाल है कि आज महाराष्ट्र, गुजरात सहित एपी की नामचीन आइस्क्रीम कम्पनियां भी उनके दर तक पहुंच रही हैं। जो दिन दूर नहीं जब यहां की महिला शक्ति का खुद का आइस्क्रीम का ब्रांड होगा। इसके लिए नाबार्ड भी प्रयासों में जुटा हुआ है।

दरअसल, अरावली की घाटियों में सीताफल बहुतायत में होता है। यहां की महिलाएं जंगलों से सीताफल एकत्रित कर लाती और सड़क किनारे बैठकर बेचा करती थी, लेकिन सही प्रतिफल नहीं मिल पा रहा था। 2010 के बाद सरकारी व सृजन संस्था के प्रयासों से आदिवासी क्षेत्र के बोरवा गांव की बायती महिला और कमलादेवी की सरगीवाड़ी सहित गिन्दी-पुनी महिलाओं ने सीताफल बेचने के बजाय इनका पल्प निकालने का काम शुरू किया। फिर यहां स्वयं सहायता समूह बने और धूमर महिला सहायता समिति बनाई गई। पल्प निकालने के लिए कबायदा महिलाओं को प्रशिक्षित किया गया। आज समिति से 4300 से अधिक आदिवासी महिलाएं जुड़ी हैं।

ऐसे समझें विकास

2010 तक निजी कम्पनियां बाहर एपल प्रक्रियाओं के हिसाब से पल्प खरीदती थीं। लेकिन 2014 के बाद धूमर महिला समिति खुद ये खरीद करने लगी और अब एपल देने शुरू किया। फिर 13 एपल और अब 70 एपल प्रक्रियाओं के महिलाओं को वाजिब मिल पा रहे हैं।

पत्रिका शी पावर

वेल्यू एडेड प्रोडक्ट से बनाई पहचान

सीताफल का पल्प आज वेल्यू एडेड प्रोडक्ट बन चुका है। सिक्के सहत इस समिति के जरिए सीताफल का नी टन (दी हजार 900 किलो) पल्प निकालकर बेचा गया। वहीं इस बार ये लक्ष्य 15 टन का रखा गया है। ये पल्प आइस्क्रीम का स्वाद तो बढ़ाता ही है, बेल की कम्पनीय होटलों में इसकी अलग-अलग रेसिपी भी बनती है।

हाइटेक कलेक्शन सेंटर, प्रोसेसिंग यूनिट भी

28 गांवों की 4369 महिलाएं ये कार्य कर रही हैं। कोकलवाड़, खैरण गाट, खैरा की नाल, गौरवाड़, ऊंची पाली, ऊंचा गौरवाड़ा, तली, नाडिया व मंदियाला फली में कलेक्शन सेंटर बनाए गए हैं, जहां फ्रीज लगे हुए हैं। यहां क्षेत्र में प्रोसेसिंग यूनिट भी है।

15 Oct 2021

पाली सिटी . जिला

महिला दिवस विशेष | कड़े संघर्ष से निकली सफलता की कहानी, 5 महिलाओं ने 300 महिलाओं को जोड़कर शुरू किया तालाबों का कारोबार

पाली की सात महिलाओं की कहानियां, जो बनी सामाजिक और आर्थिक बदलाव की मिसाल

भास्कर संवाददाता | पाली

यह है वह सात महिलाएं जो समाज में लेकर आई सामाजिक और आर्थिक बदलाव

5 महिलाओं ने तैयार किया यूनिट तगड़ा, अब 40 लाख तक टर्न ओवर

जुड़ी

आय बढ़ाने के नाम से कांपते हैं हाथ महिला

10 महिलाओं के साथ शुरू किया व्यापार, अब कर रही हैं लाखना 50 लाख का कारोबार

15 Oct 2021

अब नहीं फैलाने पड़ते औरों के आगे हाथ, खुले में शौच मुक्ति की ओर भी बढ़ रहे कदम

खुद अनपढ़ पर हिसाब अंगुलियों पर, कमा भी रही और बच्चों को पढ़ा भी रहीं

राजस्थान पत्रिका
प्रकाशित खबर

आदिवासी क्षेत्र में बदलाव की तस्वीर

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
rajasthanpatrika.com

पाली @ पत्रिका. पाली उपखंड में पहाड़ियों से अटा आदिवासी क्षेत्र, जहां की महिलाओं को परिवार में छोटा-मोटा निर्णय लेने तक का अधिकार नहीं था। ऐसे गांव, जहां आज भी निरक्षरता का दंश नहीं मिट पाया है तो अंधविश्वास गहरी पैठ किए हुए है। शराब की बुराई अलग से, आज उसी क्षेत्र की महिलाएं खुद का जिम्मा ही उठा ही नहीं रही हैं। साथ ही खुले में शौच मुक्ति की दिशा में भी करीब 28 गांवों की चार हजार से अधिक महिलाएं अपने परिवार की कारोबारी बनकर अपनी तकदीर खुद अपने हाथों से लिख पा रही हैं। आज यहां की अनपढ़ अपने परिवार का जिम्मा तो उठा ही पा रही हैं। अपने बच्चों को स्कूल तक भेज रही हैं। ये सब संभव हो पाया है सामूहिक प्रयासों से, जहां आज महिलाएं सीताफल के पल्प के जरिए आर्थिक आजादी की राह पर बढ़ चली हैं तो पलाश के फूलों की गुलाल, एलोवेरा जूस व बेर के कूट पाउडर के जरिए ग्वापार के नए रास्ते भी तलाश चुकी हैं। खास बात ये है कि ये खुद हिसाब भी रख रही हैं।

निरक्षरता, खुद विवाह, अंधविश्वास और शराब की लत सरीखी बुराइयों के मकड़जाल में फंसे खाली के आदिवासी क्षेत्र में बदलाव की ये कहानी ज्यादा पुरानी नहीं है। यहां 2015 के बाद महिलाओं के जीवन स्तर में बदलाव आना शुरू हुआ। स्वयं सहायता समूहों से जुड़ने के बाद महिलाएं जंगलों से सीताफल एकत्रित कर लाती और सड़क किनारे बैठकर बेचा करती थी, लेकिन सही प्रतिफल नहीं मिल पा रहा था। 2010 के बाद सरकारी व सृजन संस्था के प्रयासों से आदिवासी क्षेत्र के बोरवा गांव की बायती महिला और कमलादेवी की सरगीवाड़ी सहित गिन्दी-पुनी महिलाओं ने

पत्रिका शी पावर

पलाश के फूलों की गुलाल संग जैविक खेती में आजमा रहे हाथ

यहां पलाश के पेड़ भी बहुतायत में हैं। ऐसे में नाबार्ड के जरिए प्रशिक्षण मिलने के बाद महिलाओं ने पलाश के फूलों से गुलाल बनानी शुरू की। गत साली में गुलाल जयपुर भेजी थी, जहां से खूब डिमांड आई थी। इसके साथ ही जैविक खेती से भी महिलाओं को जोड़ा गया है। इससे भी आर्थिकासियों के जीवन में समृद्धता आ पाएगी।

सद्दाम हुसैन, सीओ, धूमर महिला समिति

धीरे-धीरे आ रहा बदलाव

आदिवासी क्षेत्रों में अब धीरे-धीरे बदलाव आ रहा है। यहां बच्चों को शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ाया जा रहा है। बच्चों को स्कूल में प्रवेश दिलाया गया है। जिससे बदलाव की बयार चल पड़ी है। हालांकि क्षेत्र में आज भी कुछ बुराइयां है। उनके उन्मूलन के लिए समूह व महिलाएं आगे बढ़ रही है।

महिलाएं बुराइयों के प्रति उठा रही आवाज

बालिका शिक्षा के क्षेत्र में वर्ष 2015 के बाद बदलाव आना शुरू हुआ है। धूमर महिला समिति के जरिए महिलाएं सामाजिक बुराइयों के खिलाफ आवाज उठाने लगी है। ये अब बच्चियों को स्कूल भी भेजने लगी है। इसके साथ आर्थिक रूप से कुछ अब मजबूत होने लगी है। इस बदलाव के पीछे वेल्यू एडेड प्रोडक्ट व महिलाओं की मेहनत है।

वेल्यू एडेड प्रोडक्ट पर फोकस, बकरी पालन भी संवारेगा तकदीर

यहां की महिलाएं धूमर महिला समिति के जरिए वैल्यू एडेड प्रोडक्टीविटी पर फोकस करने लगी है। पहले महिलाएं बेर को एकत्र कर जोधपुर में बेचती थी, जिससे व्यापारी बेर का कूट बनाकर बेचते थे। अब समिति के जरिए खुद ही प्रोडक्ट लान्च करेगी। हाल ही में नाबार्ड बेयरमैन डॉ. जीआर चिंताला आदिवासी क्षेत्रक के कोयलाणा में ग्रामीण हाट का भूमि पूजन करने पहुंचे थे। तब उन्होंने वैल्यू एडेड प्रोडक्शन लॉन्च शुरू करने के संकेत दिए थे। बताते चलें कि यहां पर ग्रामीण हाट बन रहा है, जहां पर महिलाएं अपने उत्पाद बेच सकेंगी। इतना ही नहीं, चूंकि यहां बकरियां खूब है। ऐसे में नाबार्ड महिलाओं को आगे बढ़ाने

16 Oct 2021

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस | खाली की 13 पंचायतों के 71 गांव-ढाणियों की महिलाएं अपने दम पर बनी साक्षर

निरक्षर महिलाओं ने खुद के बूते खड़ा कर दिया 6.55 करोड़ का बैंकिंग कारोबार

10 रुपए महीने की बचत से आदिवासी महिलाओं ने बनाया साढ़े छह करोड़ का मिनी बैंक

यह कहानी है जिले के खाली ब्लॉक की उन ठेठ आदिवासी और निरक्षर महिलाओं की, जो पांच साल पहले बैंकिंग के जैसे शब्द से एकदम अनजान थी, वुरू महिलाओं ने सिलाण में 10 रुपए महीने की छोटी बचत शुरू की, अब 13 पंचायतों में इनके कई समूह, साढ़े छह करोड़ से ज्यादा की पूंजी, गांवों में ही बैंक के जरिए आर्थिक लेन-देन से साक्षर भी हो रही हैं।

खाली. उपखंड मुख्यालय से लगभग सभी महिलाएं आसपास ही।

इन आंकड़ों से समझिए

आदिवासी महिलाओं की ताकत

- 13 ग्राम पंचायतों में संचालित हैं 476 स्वयं सहायता समूह
- समूह में 6 हजार से ज्यादा महिलाएं जुड़ी हैं
- हर महीने 10 रुपए से लेकर 50 रुपए तक की बचत
- अब तक 6 करोड़ 55 लाख रुपए का लेन-देन
- 2100 से ज्यादा महिलाओं को मिल चुका है ऋण
- 6 करोड़ 55 लाख रुपए का किसी बैंक का साथ नहीं
- 2 करोड़ 17 लाख 45 हजार, बैंकों से लेकर समूह की महिलाओं ने चुकाए
- 2 करोड़ 21 लाख 45 हजार, अब तक जमा कुल ब्याज 73 लाख 30 हजार

पढ़ी-लिखी महिलाओं-युवतियों के हाथ हिसाब की जिम्मेदारी

स्वयं सहायता समूह से जुड़ने वाली महिलाएं अनपढ़ हैं। यह जानकर कि कि अधिकांश महिलाओं में अब पढ़ाई-लिखी युवतियों को समूह की जिम्मेदारी दी जा रही है। ये युवतियां कॉलेज जाकर लौटने के बाद समूह की महिलाओं को पढ़ाती हैं और हिसाब-किताब करना सिखाती हैं। महिलाओं के रुपयों का हिसाब-किताब करने के लिए गांव में ही 10 तो कहीं पढ़ी-लिखी महिलाओं को रखा गया है। कुछ जगहों पर तो ये काम पंचायत ही करती है।

6.55 करोड़ का हिसाब दे

- 13 पंचायत 6 समूह 30 हजार रुपए पूंजी, समूह की महिलाओं को ऋण 2 करोड़ 17 लाख 45 हजार, बैंकों से लेकर 33 लाख 47 हजार, बैंकों से लेकर 33 लाख 47 हजार, बैंकों से लेकर 33 लाख 47

Financial Statement

PARVEEN S KUMAR & CO.
CHARTERED ACCOUNTANTS
427, C-1, Palam Vihar, Gurgaon-122017, Haryana
Ph. : 0124-4734244
Email : parveenskumar.co@gmail.com
gangwani@accountant.com

INDEPENDENT AUDITOR'S REPORT

To the Board of Members of
Ghoomar Mahila Samiti

Report on the Financial Statements

Opinion

We have audited the financial statements of **Ghoomar Mahila Samiti,** ("the Society"), which comprise the balance sheet as at 31st March 2022, and the statement of Income & Expenditure Account, and Receipt & Payments Account for the year then ended, and notes to the financial statements, including a summary of significant accounting policies and other explanatory information.

In our opinion and to the best of our information and according to the explanations given to us, the aforesaid financial statements give the information required by the Society Act in the manner so required and give a true and fair view in conformity with the accounting principles generally accepted in India,

- in the case of the Balance Sheet ,of the state of affairs of the Society as at March 31, 2022, and
- in the case of Income and Expenditure Account, of the surplus for the year ended on that date.

Basis for Opinion

We conducted our audit in accordance with Standards on Auditing (SAs). Our responsibilities under those Standards are further described in the Auditor's Responsibilities for the Audit of the Financial Statements section of our report. We are independent of the Society in accordance with the Code of ethics issued by the Institute of Chartered Accountants of India (ICAI) together with the ethical requirements that are relevant to our audit of the financial statements under the Act, and we have fulfilled our other responsibilities in accordance with these requirements. We believe that the audit evidence we have obtained is sufficient and appropriate to provide a basis for our opinion.

Responsibilities of Management and Those Charged with Governance for the Financial Statements

Management is responsible for the preparation of these financial statements that give a true and fair view of the financial position and financial performance of the Society in accordance with the accounting principle generally accepted in India, including the accounting standards issued by ICAI, to the extent applicable. This responsibility also includes maintenance of adequate accounting records in accordance with accounting principles generally accepted in India, for safeguarding the assets of the Society and for preventing and detecting frauds and other irregularities; selection and application of appropriate accounting principles; making judgments and estimates that are responsible and prudent; and design, implementation and maintenance of adequate internal controls, that were operating effectively for ensuring the accuracy and completeness of accounting records, relevant to the preparation and presentation of financial statements that give a true and fair view and are free from material misstatement, whether due to fraud or error.

In preparing the financial statements, management is responsible for assessing the Society's ability to continue as a going concern, disclosing, as applicable, matters related to going concern and using the going concern basis of accounting unless management either intends to Society or to cease operations, or has no realistic alternative but to do so.

Management is responsible for overseeing the Society's financial reporting process.

Auditor's Responsibilities for the Audit of the Financial Statements

Our objectives are to obtain reasonable assurance about whether the financial statements as a whole are free from material misstatement, whether due to fraud or error, and to issue an auditor's report that includes our opinion. Reasonable assurance is a high level of assurance, but is not a guarantee that an audit conducted in accordance with SAs will always detect a material misstatement when it exists. Misstatements can arise from fraud or error and are considered material if, individually or in the aggregate, they could reasonably be expected to influence the economic decisions of users taken on the basis of these financial statements.

As part of an audit in accordance with SAs, we exercise professional judgment and maintain professional skepticism throughout the audit. We also:

- Identify and assess the risks of material misstatement of the financial statements, whether due to fraud or error, design and perform audit procedures responsive to those risks, and obtain audit evidence that is sufficient and appropriate to provide a basis for our opinion. The risk of not detecting a material misstatement resulting from fraud is higher than for one resultingfrom error,as fraud may involve collusion, forgery, intentional omissions, misrepresentations, or the override of internal control.
- Obtain an understanding of internal financial controls relevant to the audit in order to design audit procedures that are appropriate in the circumstances, but not for the purpose of expressing an opinion on the effectiveness of the Society's internal controls.
- Evaluate the appropriateness of accounting policies used and the reasonableness of accounting estimates and related disclosures made by management.

- Conclude on the appropriateness of management's use of the going concern basis of accounting and, based on the audit evidence obtained, whether a material uncertainty exists related to events or conditions that may cast significant doubt on the Soceity's ability to continue as a going concern. If we conclude that a material uncertainty exists, we are required to draw attention in our auditor's report to the related disclosures in the financial statements or, if such disclosures are inadequate, to modify our opinion. Our conclusions are based on the audit evidence obtained up to the date of our auditor's report. However, future events or conditions may cause the Society to cease to continue as a going concern.
- Evaluate the overall presentation, structure and content of the financial statements, including the disclosures, and whether the financial statements represent the underlying transactions and events in a manner that achieves fair presentation.

We communicate with those charged with governance regarding, among other matters, the planned scope and timing of the audit and significant audit findings, including any significant deficiencies in internal control that we identify during our audit.

We also provide those charged with governance with a statement that we have complied with relevant ethical requirements regarding independence, and to communicate with them all relationships and other matters that may reasonably be thought to bear on our independence, and where applicable, related safeguards.

We Report that:

a. We have sought and obtained all the information and explanations which to the best of our knowledge and belief were necessary for the purposes of our audit.

b. In our opinion, proper books of account as required by law have been kept by the Society so far as it appears from our examination of those books and

c. The Balance Sheet and Income & Expenditure Accounts dealt with by this report are in agreement with the relevant books of account.

for, **PARVEEN S KUMAR & Co.**
Chartered Accountants
Firm Registration No. 030274N

PARVEEN S KUMAR & CO. ★ CHARTERED ACCOUNTANTS ★ FRN : 030274N GURGAON

P. KUMAR
F.C.A.
M.No.524665
UDIN: 22524665AIQGFR5449

May 9th, 2022 | Gurugram, Haryana

GHOOMAR MAHILA SAMITI

(A Society registered under Rajasthan Society Registration Act, 1958)

Audited Financial Statement

Amount in ₹

BALANCE SHEET AS AT	Note No.	31-Mar-2022	31-Mar-2021
SOURCES OF FUNDS			
CORPUS FUND	1	400,000	400,000
REVOLVING FUND	2	-	-
OTHER FUNDS AND RESERVES	3		
Restricted Funds-Unspent Project Balances		-	218,180
***Less** : Restricted Funds Overspent Balances*		-	14,498
		-	203,682
Add : Unrestricted Funds		3,399,836	2,518,505
Total		**3,799,836**	**3,122,187**
APPLICATION OF FUNDS			
FIXED ASSETS			
Tangible assets	4	116,755	102,544
CURRENT ASSETS (A)			
a) Cash and bank balances	5	4,151,588	3,410,258
b) Sundry Debtors	6	25,722	(87,067)
c) Receivable from members under sanitation project		-	134,615
d) Other Current assets	7	112,576	204,507
Sub Total (A)		***4,289,886***	***3,662,313***
G-3			
CURRENT LIABILITIES AND PROVISIONS (B)			
(a) Current liabilities and provisions	8	606,805	642,670
Sub Total (B)		***606,805***	***642,670***
Net Current Assets (A-B)		**3,683,081**	**3,019,643**
Total		**3,799,836**	**3,122,187**
Significant Accounting Polices and Notes on Accou	**12**		

The accompanying notes referred to above form an integral part of these financial statements.

As per our report of even date
for **PARVEEN S KUMAR & CO.**
Chartered Accountants
ICAI Firm Regn. No. 030274N

PARVEEN S KUMAR & CO. ★ CHARTERED ACCOUNTANTS ★ FRN : 030274N GURGAON

Parveen Kumar
FCA
ICAI M. No: 524665

Pali, Rajasthan | May 9th, 2022

***for and on behalf of Board Members of* Ghoomar Mahila Samiti**

President

Secretary **Treasurer**

घूमर महिला समिति

अध्यक्ष सचिव कोषाध्यक्ष

Structure of Ghoomar Mahila Samiti

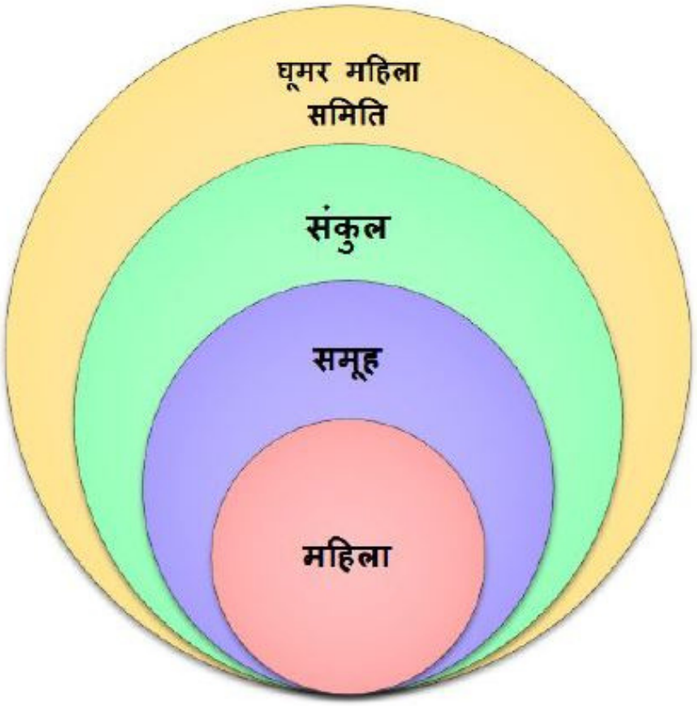

Objective of Ghoomar Mahila Samiti

About Ghoomar Mahila Samiti

Before

After

Holistic Development

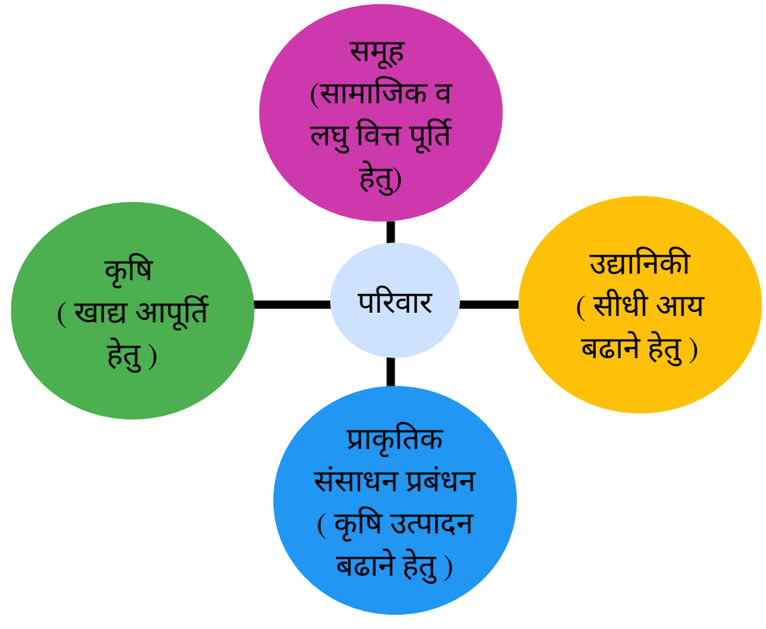

Overview of Federation

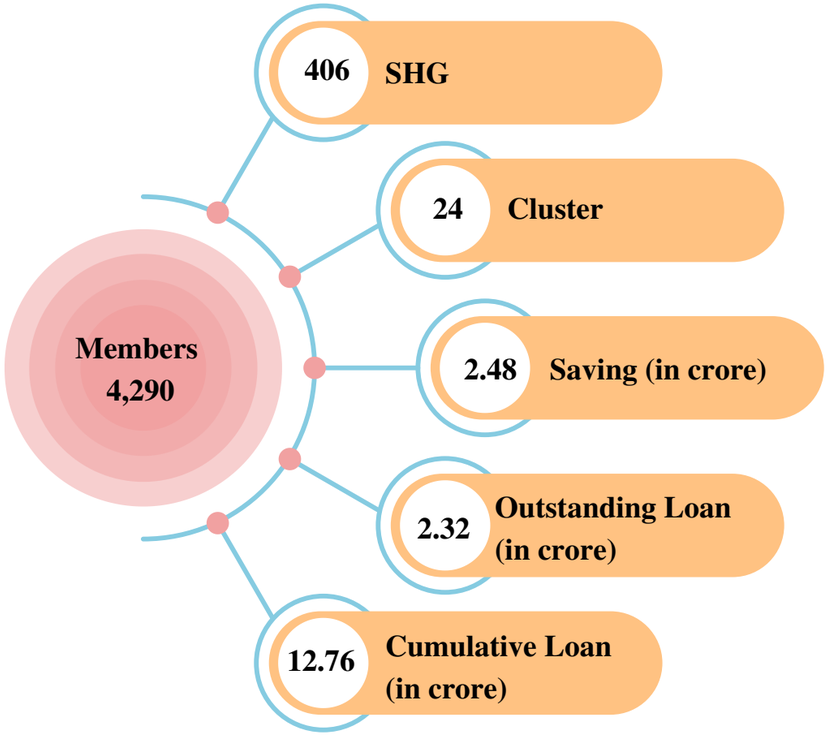

Five principles of Self-help Group

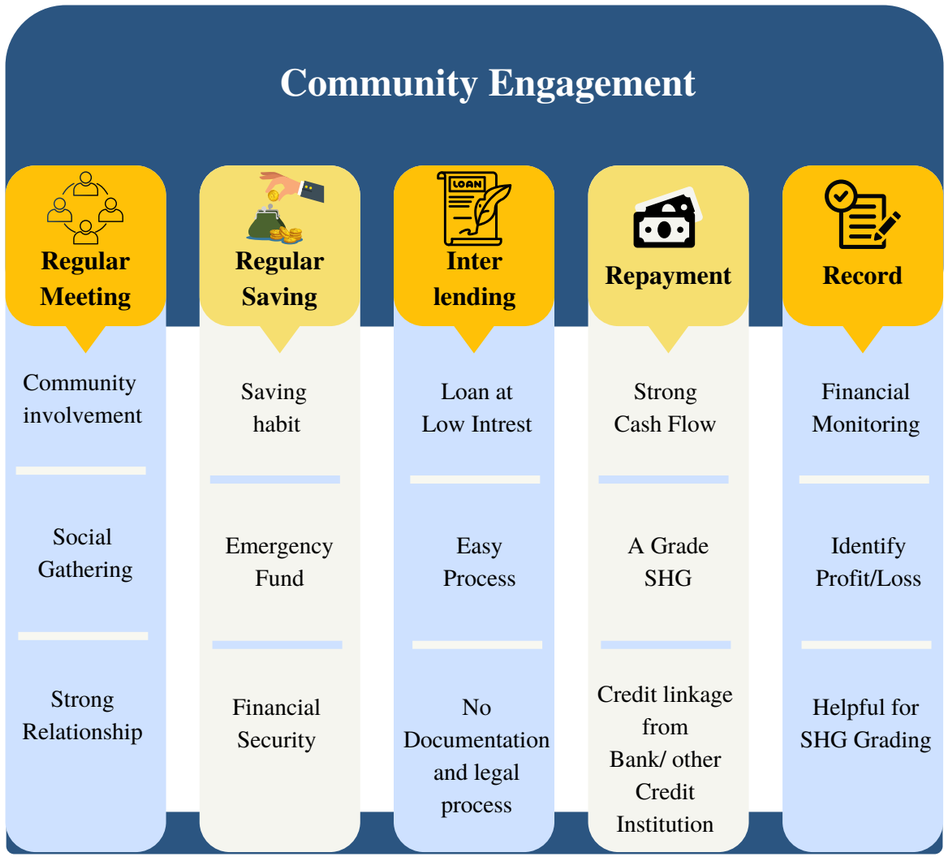

स्वयं सहायता समूह की अनूठी विशेषताएं

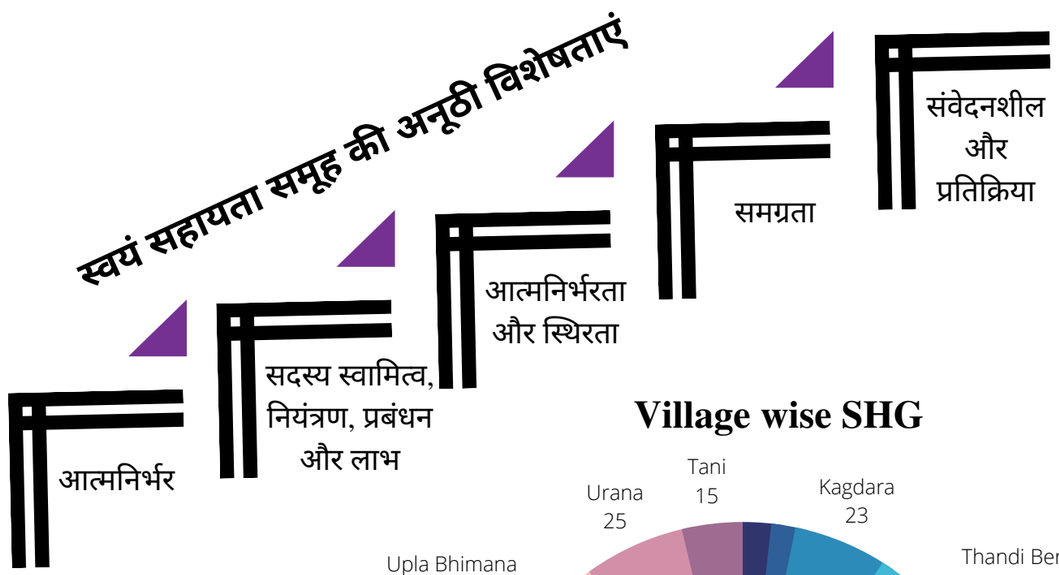

Village wise SHG

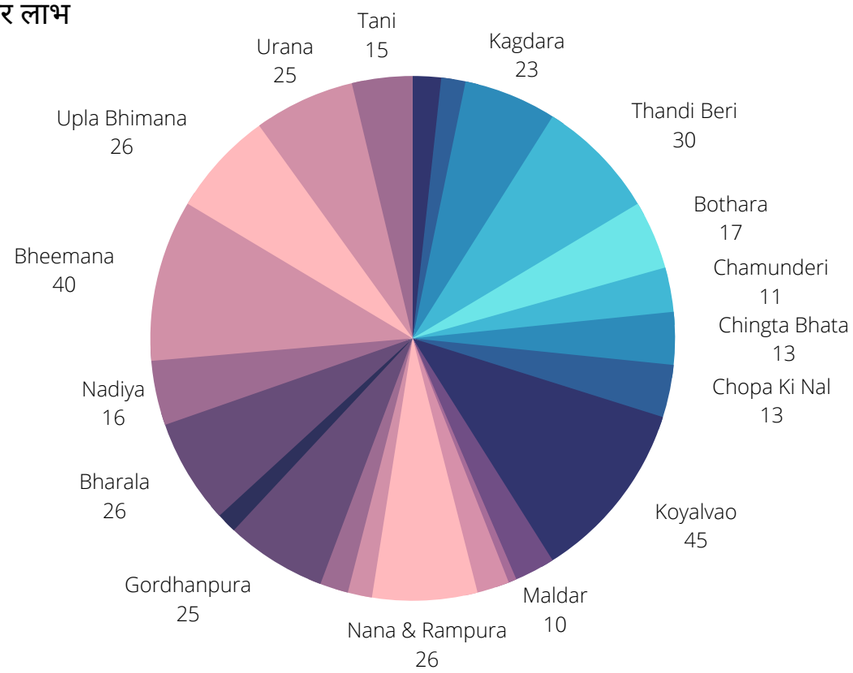

Our Supporters

srijan सृजन
Self-Reliant Initiatives through Joint Action

World Health Organization India

Samarthya

CIN: U01122RJ2015PTC047575
Ghummar Mahila Producer Company Ltd.

NASSCOM® FOUNDATION

RangDe